वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी - 2015

* *ऐसे जन देव प्रभाव प्राप्त नहीं कर सकते*
* हमारे माता पिता
* इंसानियत का निजाम है वो
* धरती पर स्वर्ग
* एक दिल की धड़कन के लिए दो शहरों ने थामी रफ्तार
* किताब के पन्नों जैसा है जीवन का हर दिन
* बच्चों के सुधार के लिए कुछ टिप्स
* श्री अकबरपुर की यात्रा
* लखनऊ में सभाएं
* धर्मशाला योल में प्रचार

साईकोपैथ

हर व्यक्ति जीवन की परिभाषा अपने-अपने ज्ञान, तजुर्बे, विश्वासों तथा धारणाओं के आधाार पर अलग-अलग करता है। किसी के लिए जिन्दगी प्यार का मधुर गीत है, किसी के लिए जिन्दगी कठोर बनवास है जिसे हर इंसान को हंसकर अथवा रोकर काटना ही पड़ता है। आदि.... आदि.....। लगभग पच्चास वर्ष पहले एक फिल्मी गीत बड़ा मशहूर हुआ था –

''दुनिया में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा ।
जीवन है अगर ज़हर तो पीना ही पड़ेगा ।।''

प्रत्येक मनुष्य का जीवन के प्रति अपना-अपना दृष्टिकोण है। आज के दौर में जहाँ हम मिलावट, भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, बलात्कार, कत्ल, आत्म-हत्या, आदि के महाभयानक मानवीय अपराधों से जूझ रहे हैं। शक्तिशाली लोगों के द्वारा कमजोर-लोगों का भरपूर शोषण करना भी आम बात है। लगभग सारी सरकारें तथा कार्पोरट-जगत भी लोगों- विशेषकर आम जनों का ही सबसे अधिक शोषण करते हैं। आप सबने टी.वी सिरियल ''आफिस-आफिस'' तो देखा ही होगा जिसके द्वारा यह दिखाने का मनोरंजक-प्रयास किया गया है कि आम जन मुस्सदी लाल है जिसको कोई भी लूटने के लिए हर प्रकार की ओछी से ओछी हरकतें करता रहता है। इस विषय में समाज-शास्त्री बहुत चिंतित हैं कि हमारा समाज किस दिशा की ओर जा रहा है तथा इस का क्या बनेगा?

ऊपर वर्णित-समस्याओं के अतिरिक्त 'मनुष्य-समाज' की एक और बहुत बड़ी समस्या है – 'साईकोपैथ' अर्थात 'सामाजिक-शिकारी'।

''साईकोपैथ'' अर्थात इस श्रेणी के लोग एक प्रकार के मानसिक-रोग का शिकार होते हैं, और अपनी इसी वृति के कारण एक मंझे हुए शिकारी की तरह अपने शिकार की तलाश में रहते हैं। ऐसे लोग शक्तिशाली, प्रतिष्ठित, धनवान, तथा उच्च-पदधारी लोगों के आस-पास आसानी से देखे जा सकते हैं। ऐसे लोग बिना किसी पछतावे के दूसरो को हानि पहुंचाने की वृति के गुलाम होते हैं तथा इन्हें हत्याएं तक करने में भी कोई संकोच नही बल्कि अपार सुख मिलता है। यही कारण है कि दुनिया भर में इस तरह की मानसिक-प्रवृति वाले लोग अधिकतर राजनीति, मीडिया, व्यवसाय तथा प्रबंधकीय-क्षेत्रों में अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि महत्वपूर्ण पदों तथा कार्यालयों आदि में काम करने वालों को साईकोपैथ अर्थात सामजिक-शिकारियों से सदा सावधान रहना चाहिए। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि ऐसे लोगों की पहचान आसान नहीं होती, लेकिन असंभव भी नहीं। उनका कहना है कि जो व्यक्ति जोड़-तोड़ करने में महारत रखता हो, घमंडी हो, कठोर हो, अधीर हो, स्वेच्छाचारी हो, बिना विचार करने वाला और गुस्सैल हो -- यह ''साईकोपैथ'' अर्थात सामाजिक-शिकारी होता है। ऐसे लोगों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इनमे नैतिकता, दूसरे लोगों के प्रति सन्मान भाव तथा मानवीय संवेदनाएं नही होती ।

प्रो. हेयर का कहना है कि ऐसे लोगों की पहचान करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इनके बारे जागरूक तथा सर्तक रहें तथा ऐसे लोगों से सदा उचित दूरी बना कर रखें । जहाँ तक हो सके – ऐसे लोगों को अनुचित श्रेय कभी मत लेने दें तथा इन्हें अपने भावों से परिचित करवाते रहें तथा सदा हतोत्साहित करते रहें ।

(चन्द्र गुप्त)

बुद्धिमान की तारीफ होती है, बलशाली से डरा जाता है, पर भरोसा सिर्फ चिरित्रवान पर किया जाता है। (अलफ्रेड, आस्ट्रियन, मनोचिकित्सक)

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 2

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

फरवरी – 2015
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

ऐसे जन देव प्रभाव प्राप्त नहीं कर सकते।

मनुष्य नेचर के विकास क्रम का अजूबा है। मनुष्य नेचर में ही है, नेचर का ही अंग है। पशु जगत के विकास क्रम में प्रगट हुआ है। मनुष्य का अस्तित्व पर उसके जीने मरने पर, बनने बिगड़ने पर, भले बुरे पर, नेचर के ही अपने नियम हावी हैं। नेचर की कुछ वस्तुएं मनुष्य को जीने के लिए अत्यन्त अवश्यक वा परम अवश्यक हैं। उनके बिना मनुष्य जिन्दा नहीं रह सकता। मनुष्य को हर क्षण, हर पल, उनकी आवश्यकता है। वह वस्तुएं हैं, शुद्ध हवा, आक्सीजन शुद्ध पानी, खुराक, ताप और रोशनी आदि। इन वस्तुओं के साथ मनुष्य के लिए नेचर ने अकाट्य सम्बन्ध रखा है। होश रखने वाले वा सोझी रखने वाले लोग इस नियम का ज्ञान और बोध रखकर उन्हें प्राप्त वा सेवन करने के यत्न में रहते हैं। शुद्ध हवा हरियाली भरे वनस्पति से प्राप्त होती है, इस लिए सेहत का फिकर रखने वाले हरियाली भरे वातावरण के चाहवान रहते हैं।

मनुष्य केवल शरीर नही, वह सोझी, बुद्धि, दिमाग, मन की भावनाएं या आत्मा रखता है। मनुष्य की जान वा जीवनी शक्ति ही मनुष्य के अस्तित्व में असल, मुख्य, मूल, सत्य वा सार वस्तु है। मनुष्य का शरीर तो उसके रहने का घर है, यह आत्मा स्थूल नहीं, सूक्ष्म वा अदृष्य वस्तु है। इस मुख्य वस्तु, आत्मा के ऊपर भी हर वस्तु की तरह नेचर के अपने नियमों का राज्य है। उक्त हवा, पानी, ताप रोशनी स्थूल वस्तुएं हैं, जो शरीर के लिए परम अवश्यक होकर भी मनुष्य को उसके मन की भावनाओं, जीवनी शक्ति या आत्मा की कोई सोझी नहीं दे सकती। उसके भले बुरे का, हानि हित का कोई बोध नहीं दे सकती। मनुष्य को अपने मन, भावनाओं, जीवनीशक्ति या आत्मा के होश देने के लिए आत्मा का ज्ञान देने के लिए, आत्मा के हित और हानि का बोध पाने के लिए आत्मा के भले और बुरे को देखने के लिए, आत्मा के जीने और मरने की अत्यन्त आवश्यक और मूल्यवान और परम आवश्यक सोझी के प्राप्त करने के लिए नेचर ने मनुष्य के लिए अद्भुत वा विशेष ज्योति और शक्ति का, जिन्हें देव प्रभाव कहते हैं, उनका हवा, पानी की तरह मोहताज रखा है। मनुष्य के अस्तित्व की सच्ची रक्षा और विकास के लिए देव प्रभावों से बढ़कर और कोई कीमती वस्तु नही हो सकती। मनुष्य के लिए देव प्रभाव, आत्मिक होश के लिए

और आत्मा के उच्च विकास के लिए उतने ही कीमती वा जरूरी हैं जितना मनुष्य के शरीर के लिए शुद्ध हवा और पानी आवश्यक है।

देव प्रभाव क्या हैं?

देव जीवन प्राप्त अर्थात पूर्ण शुभ और सत्य के अनुरागी और पूर्ण पाप और झूठ के शत्रु परम पूजनीय भगवान देवात्मा की उक्त अनुराग और विराग शक्तियों के विकास के साथ जो निराली, सर्वोच्च रोशनी और तेज की शक्तियां विकसित हुई हैं, उस रोशनी और तेज की किरणों को देव प्रभाव कहते हैं।

इसलिए जिस प्रकार शुद्ध हवा की प्राप्ति के लिए नेचर ने मनुष्य को विशाल हरियाली का मोहताज बनाया है, उसी प्रकार नेचर ने मनुष्य को आत्मिक सूझ बूझ देने के लिए आत्मिक जीवन और मौत का बोधी बनाने के लिए देवआत्मा का, उनके देव जीवन स्त्रोत की अद्वितीय ज्योति और तेज का मोहताज बनाया है।

देव ज्योति का कारज

"अद्वितीय देव ज्योति मनुष्य के अस्तित्व में जो अति गूढ़ जीवित मूल और सार वस्तु है, जिसको साधारण बोलचाल में आत्मा कहते हैं, उसके गठन प्राप्त रूप, उसके पतन, उसके मरने और जीवित रहने सम्बन्धी तत्वों को दिखाती है और उनके सम्बन्ध में ज्ञान देती है, यही पूर्ण अद्भुत देव ज्योति, मनुष्य के उन विश्वासों और विश्वास सम्बन्धी साधनों और उन चिन्ताओं और क्रियाओं को जो उसके आत्मा के जीवन के लिए हानिकारक और पतनकारी हैं, हानिकारक और पतनकारी रूप में दिखाती है और जो सच्चे विश्वास या साधन या चिन्ताएं या क्रियाएं, उसके आत्मा के जीवन की रक्षा और उन्नति के लिए आवश्यक और लाभदायक हैं, उनके लाभदायक वा हितकर रूप को दिखाती है। इस देव ज्योति के बिना और कोई ज्योति मनुष्य आत्मा के अन्धकार को दूर नहीं करती, और इसके लिए किसी प्रकार का सत्य ज्ञान भी नहीं देती है"।

देव तेज का कारज "देवात्मा का देव तेज पूर्ण निराला देव तेज है। इस अद्वितीय देव तेज की किरणों को पाने योग्य होने पर मनुष्य का उसकी योग्यतानुसार किसी ऐसे विश्वास या विश्वास सम्बन्धी साधन या चिन्ता या क्रिया के लिए जिनको उसने देवात्मा की देव ज्योति में हानिकारक या पतनकारी देखा हो, उच्च घृणा या उच्च दुख या दोनों की ही उत्पत्ति होती है, और उनके विशेष मात्रा में उत्पन्न होने पर, उनको उनसे सत्य मोक्ष प्राप्त होती है।.... आत्मिक विकार से..... सच्ची पवित्रता प्राप्त होती है। इसी प्रकार देव तेज के आवश्यक मात्रा में पाने के योग्य होने पर प्रत्येक मनुष्य के भीतर उन उच्च भावों की उत्पत्ति भी होती है, जिनके द्वारा उसका देवआत्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध बनता है"।

"इसी देव तेज के आवश्यक मात्रा में प्राप्त करने पर..... प्रत्येक मनुष्य के भीतर स्वार्थ नाशक उच्च भावों की जाग्रति होती है, कि जो उसके आत्मा में सच्चे धर्म जीवन की उत्पत्ति और उन्नति के लिए आवश्यक हैं।"

जिस प्रकार मनुष्य को शुद्ध हवा, आक्सीजन के होने का पता और उसकी अपने लिए परम आवश्यकता का पता धीरे धीरे मनुष्य की उत्पत्ति के हजारों वर्षों के बाद उसके भीतर मान्सिक शक्तियों के बहुत विकास के बाद हुआ है। पशु जगत को अभी तक भी आक्सीजन आदि की कोई होश नहीं है और न हो सकती है। आज तक भी लाखों मनुष्यों को भी पशुओं की तरह आक्सीजन आदि के सम्बन्ध में बेहद मदहोशी वा

अज्ञानता है। इस प्रकार देव प्रभावों की सच्ची सोझी और सच्ची आवश्यकता मनुष्य को हज़ारों सालों के बाद मनुष्य के और भावात्मिक विकास के साथ ही होनी सम्भव हो सकेगी। अभी तो परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सेवक सेविकाओं को भी उनकी कोई सच्ची कीमत, सच्ची होश, सच्ची आवश्यकता महसूस नहीं होती। अपने आत्मिक भले बुरे की होश और देव प्रभावों की होश परस्पर एक दूजे से सम्बन्धित वा निर्भर है।

अभी तो आम सेवक सेविकाओं को इसकी सोझी का ही बहुत बड़ा घाटा है कि देवात्मा कौन हैं?उनके देव प्रभाव क्या वस्तु हैं?उनकी क्या आवश्यकता है, उनकी प्राप्ति कैसे हो सकती है?

जिन सौभाग्यवान सेवक सेविकाओं की हार्दिक अवस्था ऐसी हो गई है कि जो परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी को और उनके देव असरों को किसी अंश जानने वा समझने के योग्य हो गए हैं, उनको भी देव प्रभावों की सच्ची भूख व आवश्कयता बोध होती है। न ही उनकी प्राप्ति के नियमों का कुछ पता है।

मोटे तौर पर जितने नीच अनुराग मनुष्य के भीतर बढ़े हुए होंगे, उतना ही देव प्रभावों की प्राप्ति के अयोग्य होगा। विशेषकर जितना किसी मनुष्य के भीतर अंह अनुराग या घमंड और घृणा का अधिकार बढ़ा होगा, उतना ही वह देव प्रभावों की प्राप्ति के अयोग्य होता है। श्रद्धावान जन ही श्रद्धा भाव की अच्छी मात्रा के अनुसार गुरू महाराज के देव प्रभावों के अधिकारी होते हैं, या हो सकते हैं। श्रद्धा से खाली मनुष्य देव प्रभावों का अधिकारी नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में गुरू महाराज स्पष्ट नियम बताते हैं: –

"(1) धर्म जीवन के विचार से किसी श्रेष्ट जनों के प्रति जो लोग अपनी किसी नीच प्रकृति के कारण श्रद्धा न कर सकते हों,

(2) या अपने से श्रेष्ट जन को अपनी किसी बुरी गति के विरूद्ध पाकर उसके प्रति द्वेष भाव से भरे रहते हों और उसको हानि पहुंचाने के लिए अपने अन्दर प्रेरणाएं अनुभव करते हों,

(3) अपने से किसी श्रेष्ट की श्रेष्टता को देखकर ईर्षा भाव से जलते और कुढ़ते रहते हों।

(4) और अपने निकृष्ट भावों से प्रेरित होकर दूसरों के लिए कलेश–दायक और हानि कारक बनने के लिए तैय्यार रहते हों।

(5) और घमंड के वश होकर अपनी इस अधम अवस्था पर फूलते और खुश होते हों, वह मेरे उच्च प्रभावों के ग्रहण करने के योग्य नहीं हो सकते।

मूल बात समझने वाली यह है कि हम साथी सेवकों को सदा सदा श्रद्धावान बने रहने का और अपने श्रद्धा भाव के साथ भरे रहने का पूरा पूरा फिकर रहना चाहिए और घमंड भाव के बढ़ने से बेहद डरते रहना चाहिए। अपने आपको सदा ठीक और उच्च विश्वास करने से डरते रहना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं कर सकेंगे तो हम परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अति दुर्लभ शरण के सौभाग्य को पाकर भी, सेवक सेविका होकर भी, अपनी महा हानि और समाज की महा हानि करे बिना नहीं रह सकते। जैसे आक्सीजन की प्राप्ति के बिना हम मुर्दा होने के लिए बेबस हो जाते हैं, वैसे ही देव प्रभावों की होश की प्राप्ति के बिना हम रूहानी पक्ष से मुर्दा हो जाने के लिए बेबस हैं।

–बलेदव सिंह

हमारे माता पिता

कितनी ताक़त है इस एक शब्द में। दुनियां के सारे सृजन इसके सामने छोटे और कमज़ोर हैं। माता पिता अपने आप में मुकम्मल लफ़्ज़ है। एक कद्दावर शख़्सियत। आसमान उसके सामने छोटा है। माता पिता हर घर की धुरी हैं, जिस पर परिवार का ब्रह्मांड घूमता है। माँ का कहा कोई माने या न माने, क्योंकि अवमानना करने पर भी वह नाराज़ नहीं होती। उसे सन्तान दुखी भी करे, तो भी उसके मुंह से बद्दुआ नहीं निकल सकती। माँ की दुआ कभी खाली नहीं जाती, लोगों के बर्तन साफ करके भी मां 3 – 4 बच्चों को पाल लेती है, परन्तु 3 – 4 बच्चे मिलकर भी एक माँ को नही पाल सकते। परन्तु अकसर पिता बच्चों का रहनुमा है। सधारवत: बच्चों का स्वार्थ पूर्ण रवैया होता है। कहीं गरीबी के कारण बच्चे माता पिता के प्रति उदासीन होते हैं, कहीं पैसा आंखों में अन्धकार की पट्टी बांध देता है। परन्तु माता पिता का आंचल सदा बच्चों को दुखों से बचाने के लिए फैला रहता है।

मां जन्म से लेकर बच्चे के अस्तित्व को घड़ती है। वह प्यार, हिम्मत, शुभ आशीशों का अम्बार होती है। आपकी उन्नति पर उस जैसी खुशी किसी को अनुभव नहीं हो सकती और बच्चे के दुख से उससे बढ़कर कोई दुखी नहीं हो सकता। बच्चे के फिक़र, ना – कामयाबी उसके मुरझाए चेहरे से साफ झलकने लगती है। उसकी तड़प उसकी रात की नींदें उड़ा देती है। बेटियों का स्थान मां के दिल में और भी कोमलता भरा होता है। जब शादी के बाद भी बेटी घर आती है, तो पूरी रात भी गुज़र जाए, उसकी प्यार भरी बातें ख़त्म नहीं होती, रात ख़त्म हो जाती है।

आजकल माता – पिता सन्तान सम्बन्धी दिन हैं, जो परम पूजनीय भगवान के आदेश इस सम्बन्ध को और भी मधुर – सम्मानिय और प्यार भरा बना सकते हैं। उनके धन्य भाग्य हैं, जिनके माता – पिता इस दुनियां में जीवित हैं। उनके गुणों को देखकर, उनके उपकारों को अनुभव करके और फिर उनके लिए तहदिल से सेवाकारी होकर इन दिनों को सफल करना चाहिए। जिनके माता पिता दुर्भाग्य से इस दुनियां में नहीं हैं, उन्हें उनके गुणों वा उपकारों को सामने लाकर उनके आगे नतमस्तक प्रणाम करना वा उनके लिए दिल से शुभकामना करनी चाहिए। हमारे माता पिता ने बहुत दुख उठाकर हमें पाला पोसा, शिक्षा दी और खाने कमाने के योग्य बनाया है। एक एक माता पिता के कष्टों की लिस्ट इतनी लम्बी होती है कि यदि बच्चे दिल से उन्हें याद करने की कोशिश करें तो उनके आगे कोई गुस्ताख़ी करने का दुस्साहस ही नहीं कर सकते। बुढ़ापे में जब माता पिता असहाय हो जाते हैं, तब बच्चों के स्नेह, सम्मान वा समय की और भी ज़रूरत होती है, बेशक आज के व्यस्त जीवन में यह सरल नहीं है, परन्तु जो माता पिता ने हमारी असहाय अवस्था में हमारे लिए किया है, वह भी आसान नहीं था। उनका वह रात रात भर जागना, बिमारी में अपना खाना पीना, दुख दर्द भूल जाना, अपने खर्चों को कम करके बच्चों पर खर्च करना, उनकी खुशी के लिए अपनी पहुंच से बढ़कर खर्च करना और गिला न करना, हमें बार बार याद करना चाहिए। उनके लिए कुछ न कुछ भेंट करने वा उनके गले में फूलों का हार डालकर उन्हें सम्मानित करना चाहिए। इससे उनके दिल को ठण्डक मिलती है।

मां जहां बच्चे के लिए पहली पाठशाला है, तो पिता को बच्चे एक आदर्श रूप में देख़ते हैं। इसलिए जो पिता अपना आदर्श जीवन बच्चों के सामने रखते हैं, तो अकसर बच्चे उस पर गर्व करते

हैं। मां तो प्यार की मूर्ति होती है, पिता को भी आदर्श पिता बनना होता है। आज भी हम देखते हैं कि अपने कन्धों पर बिठाकर पिता बच्चे को रामलीला दिखाने, दशहरा दिखाने आदि लेकर जाते हैं। ऊंगली पकड़कर घुमाने ले जाना बच्चे में सुरक्षा की भावना भरता है। छोटी-2 बातों की शिक्षा देना, बैठना उठना सिखाना, खाना खाना सिखाना, इन्हीं बातों से बच्चा दिन पर दिन सुसभ्य बनता है। हमने देखा है कि बड़ी उमर में जाकर भी पिता की दी हुई सीख़ बच्चे याद करते हैं। पिता सख़्त वा अनुशासन प्रिय ज़रूर होते हैं पर मां का स्नेह बच्चे की जिन्दगी में समंजस्य बनाए रखता है। छोटी उमर में बच्चों को पिता सख़्त नज़र आते हैं, परन्तु सख़्ती से अच्छे नियमों के पालन से बड़े होकर उनकी ज़िन्दगी संवर जाती है। पिता बच्चे को जीवन की कड़वी सचाईयों से रूबरू करवाते हैं, जो बच्चे की भविष्य की नींव को मजबूत करती हैं। पिता बच्चे का कैरीयर बनाने में सबसे बड़े गाईड होते हैं। वह बच्चे को स्वाभिमानी बनाते हैं, ईमानदार पिता बच्चे में कूटकूट कर ईमानदारी भर देते हैं। वास्तव में पिता बाहर से कठोर परन्तु अन्दर से कोमल होते हैं। इसी कारण बच्चों का भविष्य संवारने में उनका अधिक योगदान होता है।

ऐसे माता पिता को हम याद करें, अपने जीवन की उन घटनाओं को याद करें, जिनसे हमारा जीवन संवरा, उनकी कुर्बानियों को याद करें जिनके कारण आज हम सम्मानिय, सुख सुविधापूर्ण जीवन जीने के योग्य हुए हैं और उनके लिए कुछ प्रैक्टीकल करें, जिससे उनका हमें जीवन दान देना निरर्थक न जाए।

मैंने एक घटना पड़ी थी कि एक भारतिय पुरुष अपने कंधे पर बिठाकर अपने पिता को हज्ज पर लेकर गया। कंधे पर बिठाकर ही सारी औपचारिकताएं पूर्ण की।

लगभग 50 वर्ष के मुहम्मद रशीद ने कहा कि पिता को जाने के लिए वह व्हीलचेयर खरीद सकता था, लेकिन अपने कंधों से ज्यादा आरामदायक व्हीलचेयर कहीं नहीं मिली। रशीद इकलौता बेटा है, मां की मौत के बाद वही पिता की देखभाल करता है। वह कहता है कि जब वह छोटा था तो पिता उसे कन्धों पर बिठाकर घुमाते थे, अब उसका समय है, पिता हज्ज करना चाहते थे, उसके पास इतना पैसा नहीं था। जब वह 80 साल के हो गए और बेटे के हालत अच्छे हो गए, तो उन्होंने पिता के सपने को पूरा करने का फैसला किया, चाहे उस पर कितना ही खर्च हो जाए। उसने यह भी तय किया कि पिता को पांव ज़मीन पर नहीं रखने दूंगा। और उसने ऐसे ही किया। ऐसे सुन्दर जज़्बे को हमारा शत:शत प्रणाम। यह बच्चों के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है।

सुरजीत बराड़

शोक समाचार

बहुत ही शोक का विषय है कि हमारे प्यारे, पुराने संगरूर निवासी धर्म सम्बन्धी श्रीमान सीताराम जी कालरा का अपने ग्रह में पहली फरवरी को दुपहिर 2 बजे के बाद बहुत ही दुखप्रद निधन हो गया है, उनका दाहसंस्कार देव समाज विधि अनुसार 2 फरवरी को हो गया है, उनके सम्बन्ध में आख़री श्राद्ध की सभा 8 फरवरी 2015 को संगरूर में प्राय: 12.30 बजे के करीब रखी गई है।

उनके इकलौते पुत्र नवजोत जी कालरा का मोबाईल फोन है :- 09888038500

दुखी दिल से बलदेव सिंह

इंसानियत का निजाम है वो

जिंदगी में ही नहीं, बल्कि इसके खत्म होने पर भी सहारे की जरूरत पड़ती है। ऐसा कोई जो जीवन चक्र के आखिरी पड़ाव को पार करा दे। उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में एक ऐसे ही शख्स हैं, जो हर अपने–बेगाने की अंतिम आसरा बनते है। मोहम्मद शरीफ जिले और आसपास के इलाके में मिली लावारिश लाशों को उनकी अंतिम गति तक पहुंचाते हैं, बिना किसी धर्म–जाति–सम्प्रदाय का भेद किए ।

'लावारिस लाशों के वारिस' का 'जन खिताब' पाए 75 वर्षीय मोहम्मद शरीफ पेशे से एक साइकिल मैकेनिक हैं। लेकिन यह सिर्फ उनकी जिंदगी का आर्थिक जरिया है, मकसद नहीं । फैजाबाद के खिड़की अलीबेग मोहल्ले में रहने वाले शरीफ चाचा लावारिसों के वारिस हैं। ऐसी लाशें, जिनका कोई वारिस नहीं होता, उन्हें शरीफ चाचा अपना आसरा देते हैं। वे लाशों का उनके धर्म के अनुसार अंतिम संस्कार करते हैं। इस बात को अगर आंकड़ों की जुबानी कहें तो वे पिछले बाईस वर्षो में अब तक लगभग 2,500 लाशों को उनकी मानवीय गरिमा दे चुके हैं। वह मानवीय गरिमा, जो मानव होने के नाते हर किसी का हक है। उनके इस काम में जाति, धर्म का कोई भेद नहीं, यहां जिसका कोई नहीं उसके हैं शरीफ चाचा! चाचा इन लावारिस लाशों की किसी अपने की तरह देखभाल करते है'। शरीफ चाचा मुस्लिम की लाश को दफनाते हैं, तो हिंदू लाशों को सरयू किनारे खुद अपने हाथों से मुखाग्नि देते हैं। यह काम वो हिंदू–मुस्लिग आवाम के जनसहयोग से करते हैं। लेकिन शरीफ चाचा के ऐसा करने के पीछे एक बहुत ही मार्मिक कहानी भी है, जो व्यवस्था की संवेदनहीनता से ही उपजी है। दरअसल, शरीफ चाचा के बेटे मोहम्मद रईस किसी काम से सुल्तानपुर गए थे । वहां उनकी किसी ने हत्या कर लाश को फेंक दिया । यही वह मोड़ है, जहां से शरीफ चाचा ने तय किया कि वे लावारिस लाशों को उसका मानवीय हक जरूर देंगे । वे कहते है कि 'हर मनुष्य का खून एक जैसा होता है, मैं मनुष्यों के बीच खून के इस रिश्ते में आस्था रखता हूं, इसलिए मैं जब तक जिंदा हूं किसी भी मानव शरीर को कुत्तों के लिए या अस्पताल में सड़ने नहीं दूंगा'।

मो. शरीफ के साथ जो त्रासदी हुई, उसमें सामान्य तौर पर लोग समाज और दुनिया से नफरत करने लगते हैं, लेकिन इन्होंने इसके विपरीत राह दिखाई। अपने दुख का सृजनात्मक उपयोग किया। बताते हैं कि वह इस घटना से टूट गए थे, साइकिल मरम्मत की दुकान चलाकर बेटे को बड़ी मेहनत से डॉक्टरी पढ़ाई थी । इस असहनीय पीड़ा के बावजूद उन्होंने खुद को संभाला और लावारिस लाशों को गरिमा प्रदान करने की ही अपनी जिंदगी बना ली ।

शरीफ चाचा सुबह नमाज पढ़ने के बाद अपने इस काम में लग जाते हैं। वे अस्पताल में मरीजों की तीमारदारी करने के साथ ही कभी–कभी उसके वतन तक पहुंचाते हैं। 3 साल पहले पित्त और 6 महीने पहले अपने गुर्दे का ऑपरेशन करा चुके चाचा अपनी ही रौ में हैं । इस काम के लिए उनके पास अब तीन ठेले हैं, जो जीआरपी थाना अयोध्या, जीआरपी थाना फैजाबाद

और जनपद चिकित्सालय के सामने लगे रहते हैं। चाचा बताते है कि जब मैने यह काम शुरू किया था, तो लोगों ने खूब ताने कसे । जब मैं लाश को रात–बेरात ठेले पर लाद कर लाता तो लोग कहते कि यह देखो 'लाशों का सौदागर जा रहा है' फिर भी मैने हार नहीं मानी । शरीफ चाचा पढ़े लिखे नहीं हैं इसलिए प्रशासन से जो भी लाश लेते हैं कागज पर लिखवाकर लेते हैं कि इसकी इवज में प्रशासन ने उन्हें इस काम के लिए कोई पैसा नही दिया है, बल्कि फोटो से लेकर सारा दस्तावेज आज तक संभाल कर रखा है।

गंगा–जमुनी तहजीब का जुड़वां शहर 'सूफी संतों की नगरी' अयोध्या–फैजाबाद को चाचा वास्तविक पहचान देने की कोशिश में लगे हैं। हालांकि तरह–तरह की परेशानियां भी उनको सताती रहती हैं। उनका बेटा जो मरम्मत के काम में हाथ बंटाता था, काफी दिन से बीमार चल रहा है। बेटी की शादी भी नहीं हो पा रही है, कहीं भी शादी की बात बनने से पहले लाशों की बात पर ही रिश्ता टूट जाता है। चाचा किराए के मकान में रहते हुए घर की जिम्मेदारियों को निभाने के साथ ही साइकिल की दुकान पर नौकरी भी करते हैं। इन सब तकलीफों के बावजूद उनका ये जज्बा मार्च 1992 से आज तक कायम है।

मां के लिए

मेरी पूजा वाली थाली मां, मेरे जीवन की खुशहाली मां,
दिल का कोना कोना रोशन कर दे, मेरी इतनी उजियाली मां,
मां, तो आख़िर मां है मेरी, वह गोरी हो या काली मां,
हम तो हैं फूल सरीखे कोमल, और इस बगिया की है माली मां।
जो कितना रखती है ध्यान हमारा, रहे कभी न प्यार से खाली मां
मैं तुफानों से घबराओ तो क्यों, है हिम्मत मुझे देने वाली मां,
है या पावन यज्ञ त्योहार हमारा, जो भगवान ने है याद दिला दी मां,
चाहे दुश्मन, सारी बन जाए दुनियां, तो भी हमे न देगी गाली मां,
जो देख हमारी मुस्कानों को, कहती है सब मैंने खुशीयां पा ली मां,
जिसे देख हमारे गुरू जी ने भी, धरती पे लेट के की थी हरियाली मां,
आदर्श यह है दर्द का रिश्ता, जिसकी हर श्वास करती है रखवाली मां।
धन्य धन्य हैं मेरे देवगुरू जी, जो सबसे पहले मेरी राह पूजा की है निकाली मां।

ओम प्रकाश आदर्श

धरती पर स्वर्ग (Report)

माता पिता के लिए सम्मान जीवन की सबसे पहली आवश्यकता : डा. खेड़ा

डा. खेड़ा चंडीगढ़ सैंटर के विद्यार्थियों तथा उपस्थित जनों पर उनके माता पिता के लिए सम्मान भाव की वर्षा की क्योंकि उनके माता पिता उनको जीवन देने वाले तथा करियर बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विद्यार्थियों ने बाल भवन में अपने अच्छे भावों के द्वारा माता पिता को सम्मानित किया । माता पिता ने महसूस किया कि आजकल के माहौल में ऐसा प्रयास करना सचमुच **Dr. Khera** की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। अपने माता पिता को सम्मानित करने के लिए बच्चों द्वारा एक गीत प्रस्तुत करने के बाद **Dr. Khera** ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए इस कार्यक्रम का महत्त्व समझाया । उन्होने बताया कि किस प्रकार यह कार्यक्रम देवधर्म संस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा की प्रेरणाओं की उपलब्धि है।

उन्होनें इस बात पर ज़ोर दिया कि जब तक समाज में अपनों से बड़ों के प्रति सम्मानभाव और कृतज्ञता नहीं होगी विशेषकर अपने माता पिता के लिए तब तक इस संसार के अंदर सारे सांसारिक सामान मानव जीवनों में सच्चा सुख नहीं दे सकते । आज जिस तरह माता पिता अपने प्यारे बच्चों से परेशान नज़र आते है और उनके परस्पर संबंध दुखदाई बनते जा रहे है, इसका परिणाम भयानक है। विद्यार्थियों ने एक गीत गाया ''मां प्यारी मां, गोद में तेरी खेला बचपन मेरा'' जिसने सबका दिल छू लिया । इसके बाद और भी गीत प्रस्तुत किये गए । जैसे कि ''माता पिता का प्यार अनोखा मिलता नहीं बाजार से', ''कैसे माता और पिता के उपकार सुनाऊ मैं'', ''बदला अदा कैसे करूँ मां तेरे एहसान का'' इसके इलावा एक गीत श्रद्धांजलि के तौर पर उन बच्चों को समर्पित किया गया जिन्होने पेशावर, पाकिस्तान में हुए हमले में अपनी जान गवाई। इस गीत के बोल थे ''मां आज मुझे न जाने देना'' दो छात्राओं ने एक पंजाबी कविता ''बुजुर्ग हुंदे ने घर दिया रौणकां'' के द्वारा आज के बदलते युग में बुजुर्गों के प्रति होने वाली लापरवाही को दर्शाया। हृदयस्पर्शी नाटक को तीन अलग अलग हिस्सों में पेश किया गया जिनके शीर्षक थे-''कड़वा सच'', ''त्याग और बलिदान'' और ''बदलते रिश्ते'' । इन नाटकों के पश्चात अधिकतर उपस्थित जन भावुक होकर अपनी गल्तियों पर पश्चाताप करते दिखाई दिए ।

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मुख्य अतिथि, अतिथिगण एवं सभी जनों का आभार प्रकट किया जिनकी मेहनत से ऐसा उच्च कोटि का कार्यक्रम संभव हुआ । उन्होनें माता पिता और बच्चों को आपसी संबंधों में गिरावट आने के कारणों को उजागर करते हुए इस बढ़ती हुई बिमारी का सही ईलाज भी बताया ।

कार्यक्रम के अंत में डा. आर.पी. चंद (**IAS**), ऐडिशनल चीफ सेक्रेटरी, हरियाणा सरकार, ने कहा कि **Dr. Khera** ने विद्यार्थियों में देश एवं माता पिता के लिए जो प्रेम और सम्मान को बढ़ाने का अनोखा काम किया है वो आज के युग में एक आश्चर्यजनक और सराहनीय कार्य है। उन्होनें यहां तक कहा कि आज के दौर में बदलते रिश्तों की नाजुकता को देखते हुए कहीं हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी को भी ''माता पिता संतान दिवस'' को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का फैसला न लेना पड़ जाए । यदि हम अपने देश के वासियों में ऐसे महान मूल्यों को उतार सकें तो वे हर प्रकार से जीवन में सफल हो सकते हैं।

एक दिल की धड़कन के लिए दो शहरों ने थामी रफ्तार

हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए बेंगलुरू से चेन्नई पहुंचाया दिला पुलिस ने दोनो शहरों में 54 किलोमीटर के रूट को खाली कराया

जरूरतमंद को दिल पहुंचाने के लिए पुलिस ने एक बार फिर सड़क पर चलता ट्रैफिक रोक दिया । इस बार एक नहीं, दो-दो शहर । बेगलुरू और चेन्नई । वो भी कुल 54 किमी लंबी सड़क । 42 किमी बेंगलुरू और 12 किमी चेन्नई में प्रशासन ने इस को नाम दिया ग्रीन कॉरीडार । ये पूरी कवायद की गई बेंगलुरू में ब्रेन डेड हो चुकी 30 साल की महिला के दिल की सुरक्षित चेन्नई पहुंचाने के लिए । वहां एक मरीज का सफल हार्ट ट्रांसप्लांट किया गया ।

बेंगलुरू के बीजीएस अस्पताल के प्रवक्ता सतीश मंजूनाथ ने बताया कि तमिलनाडु के उसूर में एक महिला के सिर में चोट लगी । हालत खराब होने पर उसे बेंगलुरू के बीजीएस अस्पताल लाया गया । लेकिन मंगलवार रात वह ब्रेन डेड हो गई । इसके बाद एक संस्था के समझाने पर महिला के परिजन अंग दान को तैयार हो गए । लिवर, किडनी और आंखें कर्नाटक के लोगों को दान कर दी गई । जबकि दिल चेन्नई भेजा गया । इत्तफाक से बुधवार सुबह ही अस्पताल के डॉ. एनके वेंकटरमन्ना के पास चैन्नई के फोर्टिस अस्पताल से फोन आया । उन्हें मरीज के लिए दिल की जरूरत थी । फौरन बेंगलुरू ट्रैफिक पुलिस से बात की गई। पुलिस ने अस्पताल से एयरपोर्ट तक 42 किमी सड़क एक तरफ से खाली करा दी । एंबुलेंस से दिल को एयरपोर्ट और वहां से विमान के जरिये चेन्नई भेजा गया । उधर चेन्नई पुलिस ने भी एयरपोर्ट से अस्पताल तक का 12 किमी का रूट खाली करा रखा था । देर शाम एक मरीज को यह दिल सफलता के साथ ट्रांसप्लांट कर दिया गया ।

मैडीकल सांईस का यह चकित करने वाला कार्य है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

किताब के पन्नों जैसा है जीवन का हर दिन

कई पन्नों की नोटबुक के बारे में सोचें। हर पेज अपने आप में खुला पेज है। यह हम पर है कि हम उस पर कविता लिखते हैं या फिर कुछ और लिखते हैं। यहां तक कि हम पेज को छोड़ अगले पेज पर भी आ सकते हैं। जब तक नोटबुक खत्म होती है,यह हमारी स्वतंत्रता होती है कि हम उसका कैसा उपयोग करते हैं। कुछ खराब लिखते हैं या अच्छा जो भी है, वह हम पर निर्भर करता है।

नोटबुक की तुलना हमारे जीवन से हो सकती है। हर पन्ने की तरह हमारे जीवन का हर दिन भी है। हर दिन की सुबह हमें विकल्प देती है कि कैसे दिन बिताएं। मौत आने तक यह चुनने का सिलसिला जारी रहता है। हमारी कोई भी आयु हो, या बुरा से बुरा समय हो। यदि इसे नहीं समझते हैं तो मानो कि हमने जीवन का पिछला समय व्यर्थ गंवाया है। अभी भी हम आज से इसकी शुरुआत कर सकते हैं। हम जीवन का हर दिन आज से शुरू कर सकते हैं। इससे जीवन अच्छा लगने लगेगा।

नोटबुक से अलग जीवन में यह नहीं मालूम होता हैं कि अगला दिन है या नहीं, जैसे नोटबुक में पेज के बारे में हमें मालूम होता है। इसमें से एक पेज आखिरी होता है। हो सकता है कोई दिन आपका आखिरी दिन हो।

वास्तव में 'कल' के बारे में कोई गारंटी नहीं है। हालांकि निराशावादी रुख नहीं होना चाहिए, लेकिन यथार्थवादी रहना चाहिए। सच की अनदेखी की जा सकती है, लेकिन इंकार नहीं कर सकते हैं। कई लोगों ने कल का सूरज देखा होगा, लेकिन शायद सूर्यास्त से पहले किसी और लोक में चले गए। मृत्यु की पृष्ठभूमि पर ही जीवन के मूल्य को बेहतर समझ सकते हैं।

इसके बारे में सोचो। क्या चिंताएं, तनाव या फिर नकारात्मकता का कोई अर्थ है, क्योंकि कोई भी दिन जीवन का आखिरी दिन हो सकता है। बजाय इसके अपने दिन को मदद, उल्लास, संगीत नृत्य, उपयोगिता और सकारात्मक होने से भर दो। यदि अंत को टाल नहीं सकते तो कम से कम बेहतर तो बना ही सकते हैं। केवल आज के लिए हम मधुर, प्रसन्न, धीरज रखने वाले, प्रेम करने वाले, शुद्ध और जिम्मेदार बन सकते हैं। आज के दिन को बेहतर बनाने के लिए काम करें। और यही जीवन है भी।

इसी विचार को दूसरों में भी फैलाना चाहिए। क्योंकि उनके भी जीवन का एक दिन आखिरी हो सकता है। सही तो यह है कि हमारे पास एक दूसरे से प्रेम करने का पर्याप्त समय ही नहीं है। तो फिर लड़ने के लिए समय क्यों है? साचें कि आपका भविष्य कैसा होगा, यदि अपने जीवन को बिना स्वार्थ के रखा है। आप हमेशा प्रसन्न रहेंगे और बेहतर जवाब आप ही जानते हैं।

बच्चों के सुधार के लिए कुछ टिप्स

हर माता – पिता की ख्वाहिश होती है कि उन का बच्चा बड़ा हो कर बड़ा आदमी बनें और हर क्षेत्र में वह अपने माता – पिता का नाम रोशन करे, यह सोचना गलत भी नहीं है, मगर क्या आप ने सोचा है कि बच्चे की अभिरुचि किस श्रेत्र में है, आप की प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि आप का बच्चा डाक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस बनने से पहले एक अच्छा इंसान बने, जो माता – पिता बचपन में बच्चे की गलती को नजरअंदाज करते हैं उनकी प्रवृति उन के बड़े होते बच्चे को अपराधिक पृष्ठभूमि में धकेल देती है, इसलिए बच्चों की हर गलती का संज्ञान लेना माता – पिता के लिए बेहद जरूरी है ।

अगर निम्न सावधानियां बरती जाएं तो दबंग होते बच्चों की समस्याओं से बखूबी निबटा जा सकता है :

- बच्चों की मांग पूरी करें मगर उन्हें यह एहसास अवश्य कराते रहें कि उन के फुजूल खर्च को बरदाश्त नहीं किया जाएगा ।
- बच्चों को आरंभ से ही संयम बरतने और गुस्से पर काबू रखने की शिक्षा देनी चाहिए । पाठ्यक्रम के साथ – 2 उसके व्यवहारिक ज्ञान की ओर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए ।
- पढ़ाई के साथ बच्चों को खेलकूद, पेंटिंग, नृत्यसंगीत के प्रति दिलचस्पी लेने के लिए भी प्रेरित करते रहना चाहिए। इसके लिए आप चाहें तो स्कूल के शिक्षकों से भी सलाह ले सकते हैं ।
- अपनी व्यस्तता के बावजूद टीचरपेरैंट्स मीटिंग में हिस्सा जरूर लेना चाहिए । बच्चों की गतिविधियों की जानकारी वहां से आसानी से मिल सकती है। बच्चों का रवैया पढ़ाई के प्रति कैसा है, इसे भी वहां जाने।
- एकांत में इंटरनैट सर्फिंग और बंद कमरे में डीवीडी प्लेयर पर दिलचस्पी लेने वाले बच्चों पर पैनी नजर रखें क्योंकि बाजार में आजकल ऐसी अश्लील सीडीज की भरमार है जो बच्चे को राह से भटका सकती है।
- कभी भूल से भी बच्चों के सामने आपस में न तो झगड़ें और न ह अपनी संपन्नता और वैभव का बढ़चढ़ कर बखान करें। उन्हें यह अहमियत जरूर बताएं कि पैसा कितना मेहनत से कमाया जाता है।
- यदि आप का बच्चा घर और स्कूल में असामान्य व्यवहार करता है, पढ़ाई से जी चुराता है या पढ़ने में बहानेबाजी करता है तो उसे डांटने के बजाय उसके लिए किसी विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए ।

पेज 20 का बाकी ——

गया कि अपने आपको जानना और अपनी नीचता से बचना और उच्च भावों द्वारा उच्च व्यवहार करना ही धर्म है। इसके लिए मनुष्य देवात्मा का मोहताज है। यह सभा बहुत प्रभावशाली हुई।

विनोद डोगरा वा वरिन्द्र डोगरा जी ने हज़ार हज़ार रू० अपनी पत्रिकाओं वा नियत दान के दिए। सत्यवान जी ने 1100 रू०, श्री आत्म राम जी ने 150 रू० पत्रिकाओं का दिया। एक नई पत्रिका जारी की गई। सब परिवारों में नये जनों को पुस्तकें दी गई। महोत्सव मुबारक की सूचना दी और पंहुचने की प्रेरणा की गई। यहां गुरू की कृपा से किसी सीमा तक संग्राम सफल रहा।

श्री अकबरपुर की यात्रा

जैसे पहले भी पत्रिकाओं द्वारा सूचित किया जा चुका था, गुरू महाराज के पावन जन्म स्थान पर 16 अक्तूबर से यात्रा और सत्संग का प्रोग्राम रखा गया। इस सत्संग के लिए 16 तारीख़ से 3 बजे के लगभग श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंच गए। रूरा रेलवे स्टेशन से श्रीमान किशन सिंह जी चौहान आकर उन्हें ले गए। इसी दिन ही लखनऊ से अग्रवाल साहिब कई सौगातों को लेकर पहुंच गए थे। मेरठ से चौधरी नरेन्द्र जी और दीप चन्द जी पहुंच गए। वह हमेशा की तरह यात्रियों के लिए गुड़ लेकर आए। श्रीमान किशन सहाय जी अपनी पुत्री समेत पहुंच गए। वह भी यात्रियों के लिए सुन्दर मिष्ठान लेकर आए। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने वहां पहुंच कर सबसे पहले पावन हवेली आगे प्रणाम किया, फिर कपड़े आदि बदलकर श्री चौहान जी को लेकर पावन जन्म स्थान पर पूजनीय भगवान के स्टैचू पर सुन्दर हार चढ़ाया और श्रद्धा भाव से भरकर प्रणाम करके तृप्ति पाई। रात तक श्री खुशपाल सिंह जी बंगा से, श्रीमान हरी राम जी गारगी अपनी पुत्रवधु बीबी प्रोमिला समेत पहुंच गए। डाक्टर मुन्शा सिंह जी, श्रीमान दुनी चन्द जी, श्रीमान खेमचन्द जी, श्रीमान चौहान सिंह जी की बेटी अपने बेटे समेत पहुंच गई।

5 बजे एक सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई जिसमें बताया गया कि किस प्रकार अद्वितीय देवरूप का प्रकाश इस पृथ्वी के विकास क्रम में हुआ। उन्होंने अद्वितीय देव शक्तियों को प्राप्त किया है परन्तु उनको पहचाना केवल चन्द हस्तियों ने ही है। आने वाले दिनों में हमें अधिक से अधिक लाभ उठाने की आवश्यकता है। श्री सहाय जी ने भी बेबस होकर अपने सौभाग्य का वर्णन किया। चौहान जी के ब्यान के बाद यह सभा समाप्त हुई। इस सभा में 42 – 43 जन शामिल थे।

17 अक्तूबर को और यात्री जिनमें श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण से, लुधियाना से श्रीमान जगजीत सिंह जी, चण्डीगढ़ से श्रीमान मधु सूदन जी, देहरादून से डाक्टर चरणजीत सिंह जी जैरथ और उनकी धर्म पत्नी पहुंच गए। भायला से श्रीमान किशन सिंह जी की दोनो बहने भी पहुंच गई। कानपुर से श्रीमान सुभाष जी रूचलानी भी पहुँच गए। दौलतपुरा से परम पूजनीय भगवान देवात्मा के कुछ वशंज जन भी पहुँच गए। कपूरथला से श्रीमान श्रेष्ट जी अरोरा, उनकी धर्म पत्नी, बेटा और बेटी भी पहुंच गए। इस प्रकार 28 यात्री भिन्न भिन्न स्थानों से पहुँच गए। मेरठ से श्री धर्मपाल जी वैटरन धावक भी पहुँचे। यह सब यात्री आकर परम पूजनीय भगवान की जन्म स्थान पर नतमस्तक हुए। श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने सबको पावन हवेली के दर्शन कराए। साथ साथ गुरू महाराज जी की देव लीला का भी भावुक होकर ब्यान करते रहे। हवेली में कीर्तन भी होता रहा।

<u>17.10.2014 सुबह 11 बजे,</u> सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने भजन गाया "हमारे पूजनीय भगवान" इसके बाद सभापति जी ने बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा अति वचित्र और अद्भुत नई रोशनी लेकर आए हैं। पहले प्रचलित धर्म मत कहते हैं कि मनुष्य को परमात्मा ने पैदा किया है

और उसे परमात्मा ही चलाता हैं। इसलिए उसको खुश करने को, उसको मनाने की कोशिश को धर्म समझा जाता है। मनुष्य की हस्ती को जानना, विकसित करना ही धर्म है। देव धर्म में किसी जाप को धर्म नहीं समझा जाता। अपने आपको जानकर ही अपनी हस्ती को नाश से बचाया जा सकता है। मनुष्य को उसके भाव ही चलाते हैं। यह भी खोल कर बताया गया कि भाव क्या होते हैं? मनुष्य और बहुत कुछ जानता है परन्तु वह अपने आपको नहीं जानता। मनुष्य अपने आप अपने आपको जान भी नहीं सकता, क्योंकि उसके पास वह ज्योति है ही नहीं जो उसका रूप दिखा सके। इस कार्य के लिए वह हमेशा देवात्मा की देव ज्योति का मोहताज है। श्री सभापति जी ने कई राजनितिज्ञों और जानी मानी हस्तियों की घटनाओं के द्वारा ही यह सचाई पेश की कि मनुष्य को देवात्मा की देव ज्योति की अत्यन्त आवश्यकता है। इस सभा में 50 के लगभग जन शामिल हुए।

शाम 4.30 बजे, सभापति श्रीमान किशन सिंह जी चौहान – इस सभा में 50 से भी अधिक जन शामिल थे। सभापति जी ने यात्रियों के उच्च सौभाग्य का वर्णन किया और बताया कि इस यात्रा का सबसे बड़ा लाभ श्रद्धा भाव को बढ़ाना है। उन्होंने पहली अकबरपुर यात्रा का वर्णन किया जब लहौर से बस द्वारा यात्री पधारे थे। माता पूजनीय श्रीमती देवकी देवी जी एक मील से नंगे पांव चलकर इस धाम पर पधारी। हमें सेवा द्वारा, श्रद्धा, कृतज्ञता और हानि परिशाध के भावों को पैदा करने की आवश्यकता है। फिर उन्होंने गा गाकर देव कथा का प्रभावशाली ब्यान किया।

18 जून 2014 सवेरे सभापति श्रीमान बलदेव सिहं जी। इस सभा में हाज़री 60 लोगों से भी अधिक थी। श्रीमान जी ने बताया कि मिथ्या क्या है? मेरे भीतर कौन कौन से भाव हैं, जो मेरे परिचालक हैं। मनुष्य को कौन चला रहा है? हमारा क्या क्या भला वा हानि हुई है। यह एक ज़रूरी विषय है। कई बार हम गुस्से हो जाते हैं। हमें गुस्सा क्यों आता है? श्रीमान जी ने बहुत विस्तार से बताया कि हम सुखों के प्रेमक हैं। जब कोई सुख छूटता है तो गुस्सा पैदा होता है। सारे संसार में बड़े बड़े विद्वान, पंडित, मुल्लां, पादरी, भाई, धर्म प्रचारक, अपने आपको नहीं जानते। यह रोग कितने भयानक हैं, उनकी भीष्णता को भी नहीं जानते। मनुष्य अपने आपको जानने को लक्ष्य नहीं बना सका। औरों का ईलाज करने वाले भी डाक्टर बदपरहेजी वा नशों के रोगी हैं। पुण्य क्या है? पाप क्या है? शुभ वा हित क्या है? इसका ज्ञान नहीं । परोपकारी होकर भी मनुष्य अपने ज्ञान से वंचित रहता है यदि उसे देव ज्योति न मिले। मान प्रशंसा वासना का भाव बड़ा घातक है जो मनुष्य को सदा अन्धेरे में रखता है। एक एक ग्राम वासी कैसे महाराज हीरा सिंह के नाम के नारे लगवा कर बर्बाद हो गया। फिर उच्च भाव पैदा करने की प्रेरणा करते हुए शुक्रगुज़ारी और हानि परिशाध के भावों को पैदा करने पर ज़ोर दिया।

शाम 4.30 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य के नीच भाव ही उसकी बर्बादी वा हानि का मुख्य कारण हैं। मनुष्य को नीच भावों को जानने के लिए देव ज्योति का आवश्यकता है, जो देव

ज्योति देव शक्तियों से ही विकसित हो सकती थी, जो देवात्मा के भीतर ही पैदा हुई है। इस ज्योति और तेज ने जलवे पैदा किए हैं। हम उस ज्योति और तेज को प्राप्त कर सकें जो इस यात्रा का मकसद है। यदि यह मकसद पूरा नहीं हुआ, सारा संग्राम निष्फल जाएगा। सभापति जी ने अपने भीतर के नीच अनुरागों से देवात्मा के द्वारा आए परिवर्तन का भाव विभोर होकर वर्णन किया। बड़ा सुन्दर मण्डल पैदा हुआ।

19 अक्तूबर 2014, 9.30 बजे सुबह :– सभापति जी ने बताया कि नेचर ने हवा, पानी, भोजन का हमारे शरीर के साथ सम्बन्ध रखा है। इसी प्रकार हमारे आत्मा का सम्बन्ध देवात्मा से है। दीन भिखारी होकर ही यह प्रभाव मिलते हैं। प्रत्येक मनुष्य आत्मिक रूप से अधूरा है। उच्च बोधों के बिना हम अधूरे हैं। हमारे भीतर कर्तव्य बोध और बाध्यता के भाव की बहुत कमी है। मनुष्य के अधूरेपन का वर्णन करते हुए बताया कि हम अपना अधूरापन देखने के योग्य नहीं। देवात्मा इस अधूरेपन को दूर करते हैं। देवात्मा ही इस अधूरापन दूर करने में सक्षम हैं। उनको ही पूर्ण पूरक रूप में नेचर ने पैदा किया है।

श्री अकबरपुर यात्रा के उच्च प्रभाव

परम पू० भगवान की कृपा द्वारा कई जनों के हृदयों पर बहुत उच्च असर हुआ।

एक 80 वर्ष के बज़ुरग थरथराती आवाज़ में एक धर्म सम्बन्धी के पास पहुँचे और भरे दिल से इज़हार करने के लिए मजबूर हो गए, कहने लगे, "श्रीमान जी, सिर से पैरों तक पापों और विकारों से भरा पड़ा हूं।" काले मैंडे कपड़े, काला मेरा वेस, गुनाहीं भरिया मैं फिरां, लोक कहन दरवेश" मैं अंहकार और गुस्से से भरा पड़ा हूं। मैं बड़ों का अपमान कर देता हूं। गुस्से से भरकर अपमानजनक बोल जाता हूं, कई बार लिखकर भेज देता हूं। मुझे बचपन में किताबें चुराने वा नकल मारना याद आया, तभी आगे पढ़ नहीं सका। उन चोरियों के परिशोध में 500 रू० गरीब बच्चों के लिए देता हूं। उनका दिल भरा हुआ था हृदय मोम बनकर शुद्ध हो रहा था और हाथ जोड़कर मुर्ति बने खड़े थे। कह रहे थे कि श्रीमान जी कृपा करके हमें दर्शन देते रहना।

एक और नौजवान यात्री, जो कई वर्षों से सत्संग से लाभ उठा रहे हैं, वह एक धर्म सम्बन्धी के पास अपने परिवर्तन को याद करके धन्य धन्य हो रहे थे। उन्होंने बताया एक सम्बन्धी के घर शादी थी। मेरे एक सम्बन्धी ने मुझे कुछ रू० पकड़वाते हुए कहा कि तुम शादी पर मत आना यहीं शराब पीओ, वहां आकर हमारा अपमान करवाओगे। मुझे बहुत गुस्सा आया और दुख हुआ। मुझे चौधरी जी की सहायता से इस दर पर आने का सौभाग्य मिला और मुझमें उच्च परिवर्तन आ गया। मेरे नशे चले गए, लड़ाकू स्वभाव चला गया। अब मेरे एक I.A.S. सम्बन्धी के यहां शादी थी। इस अफसर ने सारा काम मेरे जिम्मे लगा दिया क्या सजावट, बरात का पूरा प्रबन्ध भी मेरी सलाह व निगरानी में हुआ। फर्नीचर भी मेरी सलाह से बनवाया गया। मैं खुशी से फूला नहीं समाता था। इतना सम्मान मिला, मैं धन्य धन्य हो रहा था। यह सब गुरू की कृपा है।

एक और नौजवान ने बताया कि मैं दिल्ली कई वर्ष ऐसे स्थान पर रहा जहां मेरी और मेरे साथियों की दादागिरी चलती थी। लोग हमारे ग्रुप से कांपते थे। 4 – 5 किलोमीटर तक हमारी बादशाहत

थी। कई बार रात को शराब पीकर कमज़ोर साथी से मारपीट करते, सुबह फिर मिलकर गुण्डागर्दी करते। वह ख़ौफनाक वा दरिंदा जीवन आज याद आ रहा है। बड़ा धन्यभाग्य महसूस हो रहा है कि यह पावन दर मिल गया। यहां कुछ सेवा करके कुछ परिशोध अवश्य होता होगा।

परम पू० भगवान की एक और जन पर कृपा हो रही है, वह शराब और कई गन्दे कामों से बचकर संगत से लाभ उठा रहे हैं। उनकी एक पुरानी मित्र लड़की (असल में शत्रु) ने किसी बुरे काम में उनका साथ मांगा, उन्होंने बड़े सभ्य ढंग से अपना उस बुराई से बचाव किया। एक अपने शुभ चिन्तक के पास अपने इन भावों को प्रगट करके राहत पाई।

ऐसे देव प्रभावों के क़िश्में देखकर परम हितकर्ता गुरू की अपार महिमा महसूस होती है। काश! ऐसी अमृत वर्षा अधिकारी आत्माओं के हृदयों तक अधिक से अधिक हो सके।

भाव प्रकाश

डा० सी.ऐस. जैरथ जी:– सत्संग मे शामिल होने का सौभाग्य मिला। बाथरूम में किसी की अच्छी साबुन पड़ी थी, उसको प्रयोग करने की चिन्ता पैदा हुई। सत्संग में आकर यह बात बुरी लगी और अपना स्वार्थी रूप नज़र आया। लेने की तरफ ध्यान जाता है, देने की ओर नहीं। नीच अनुराग बर्बाद कर देते हैं। हम नीचे की ओर बहने लगते हैं। इस संगत से ही शक्ति मिलती है। घर जाकर साधन करूंगा। अच्छी संगत की एक मजबूत किले की तरह आवश्यकता है। संगत में बार बार आना है।

डाक्टर मुन्शा सिंह जी :– इस इस सत्संग में आना नहीं चाहता था। श्रीमान जी की प्रेरणा से यहां आ गया। यहां आकर बहुत लाभ हुआ। मैं अपनी नीचताओं को देखा। अपना आलस्य अनुराग नज़र आया। कभी दांतों को ब्रुश नहीं करता था, इससे बहुत हानि हुई है। स्वाद अनुराग ने मुझे महा रोगी बना दिया है। गैस बनने लगी, माईग्रेन हो गया। शरीर में दर्द होने लगे। 18 साल से दुख भोग रहा हूं। अपनी बदपरहेज़ी दिखाई दी है। अपने भीतर के तीन चोर पकड़े हैं। इनसे बचने का फिक़र पैदा हुआ है। इस स्थान पर आने की अतिशय आवश्यकता है।

श्रीमान श्रेष्ट सिंह अरोरा :– मैं बचपन से ही गुरू महाराज के साथ जुडा हुआ हूं। घर में भी सभा साधन करता रहता हूं। श्रीमान जी की सभा बहुत देर के बाद सुनी है। मैं आलसी भी हूं, स्वाद अनुरागी भी हूं। इनसे बचने का संग्राम करूंगा। सभाओं से धन्य धन्य हो गया हूं। गुरू महाराज की पुस्तकें पढ़ने का शौक है। श्री चौहान जी का धन्यवाद करता हूं।

श्री धर्मपाल जी मेरठ :– इस सत्संग में चौहान जी की कृपा द्वारा आया हूं। अपने आपको ज़ीरो जानकर भगवान के चरणों में झुकता हूं। मैं जल्दी सेवक बनना चाहता हूं। महोत्सव पर परिवार समेत आऊंगा। और जनों को भी प्रेरित करूंगा। रात को भी गुरू महाराज की याद आती रही है। इस पावन भूमि पर नतमस्तक होकर बड़ा सौभाग्य महसूस होता है (100 साल से ऊपर उमर है)।

श्रीमती निर्मला जी:– (चौहान जी की बहन) भाई साहिब की कृपा से मैं 40 वर्ष पहले सेवक बनी थी। ऐसा गुरू वा ऐसा धर्म कहीं नहीं है। बड़ों के उपकार और अपनी ग़ल्तियां नज़र

आती हैं। गुरू की कृपा से मुझे 30 वर्ष अपनी सास की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरू का धन्यवाद करती हूं। उनकी शरण में आने से पहले मेरे घर में नर्क था। मेरे पति शराबी थे। एक बार वह बौख़ला गए। कुल्हाड़ी उठाकर मुझे मारने को आए। मैं छुप कर बच गई। 18 वर्ष से पति ने शराब छोड़ी हुई है। इस सौभाग्य को सामने लाकर बहुत धन्यवाद करती हूं। मरते दम तक गुरू से जुड़ी रहूं।

श्रीमान मुरारी लाल जी गुप्ता :– (Retd. X-En) :- मैं भी 46 वर्ष पहले सेवक बना। श्रीमन भगत सिंह जी द्वारा समाज में आया। बहुत योग्यताएं पैदा हुई हैं। दुनियां के धर्मो के मुकाबले यह धर्म न्यारा है, इसमें कोई शक नहीं। चौहान जी ने इस साधन स्थान को बहुत सुन्दर बना दिया है। खाने का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध है। धन्यवादी हूं।

श्रीमान सुभाष जी श्री अकबरपुर से :– सभाओं से जो लाभ हुआ है, उसका ब्यान नहीं हो सकता। भगवान की कृपा से मेरी काया कल्प हुई है। चौहान जी की कृपा से मेरा बहुत भला हुआ है। सेवा करके बहुत खुशी मिलती है। अपनी ग़ल्ती के लिए क्षमा मांगता हूं।

श्रीमती बलबीर शर्मा जी :– भगवान का धन्यवाद है कि यह सत्संग निर्विघ्न समाप्त हुआ है। यहां रहते हुए श्रीमान चौहान जी और राधा जी का धन्यवाद करती हूं। मेरे बच्चे भी यहां आकर लाभ उठाते हैं। दान देकर अपना भला करते हैं। 93 साल की उमर में भी मैं ठीक ठाक हूं। इसी स्थान पर जीवन यात्रा समाप्त करना चाहती हूं।

श्रीमती मैडम तिवारी जी :– ऐसा धर्म वा समाज और कहीं नहीं है। यहां हमारे जीवनों में परिवर्तन पैदा होता है। मेरे माता जी वा नानी जी भी सभाओं से लाभ उठाती रही हैं। अपने अभाव नज़र आए हैं। चौहान जी और राधा जी के मुझ पर बहुत उपकार हैं। मेरी बेटी भी सेविका बनकर समाज से जुड़ जाए।

श्री अनुपम कुमार जी :– 30 साल से मेरा समाज से सम्बन्ध है। पर मैं पहले सभाओं से लाभ नहीं उठाया। बिना किसी Interview के मुझे टीचर बनाया गया था। सोलन जाकर लगा कि नई दुनियां में आ गया हूं। यहां सेवा भाव देखा। इस संस्था से जुड़कर अपना भला करना चाहता हूं।

भाव प्रकाश से पहले स्थानीय ऐस. डी. ऐम. साहिब आए। उन्होंने श्री चौहान जी द्वारा लिखित पुस्तक "प्रज्ञा" का विमोचन भी किया।

फिर सब ने लंगर आदि के लिए दान दिया। चौहान जी ने इतनी अच्छी सभाओं के लिए धन्यवाद किया और अपनी ग़ल्ती के लिए क्षमा मांगी, जिससे धर्म सम्बन्धियों को तकलीफ में से गुजरना पड़ा। फिर देव आरती के गान और जय ध्वनि से यह प्रोग्राम समाप्त हुआ। और प्रीति भोज किया गया।

धर्म सम्बन्धियों को डब्बों में प्रसाद पैक करके दिया गया। धर्म सम्बन्धी देवकी नन्दन जी के साथ लखनऊ के लिए रवाना हो गए और बाकी अपने अपने स्थानों पर जाने के लिए वैन में कानपुर की ओर रवाना हो गए।

लखनऊ में सभाएं

20 अक्तूबर 2014 सुबह 9.30 बजे:– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। इस सभा में श्रीमान रूपचन्द जी के पारिवारिक जनों के भिन्न श्री अग्रवाल जी, डाक्टर जैरथ जी शामिल हुए। सभापति जी ने बताया कि हम समझते हैं कि हम देव समाज के विषय में सब कुछ जानते हैं, परन्तु इसकी समझ तब आती है, जब देव प्रभाव मिलते हैं। देव प्रभावों की यदि भूख नहीं लगती है, तो देव समाज़ की समझ नही आती। जब तक सैर करते नहीं, सैर के लाभ पता नहीं लगते। श्रीमान राम सिंह जी को पता था कि सैर के क्या लाभ हैं। जो लगातार देव प्रभाव संगत करता है। तभी देव प्रभावों का पता लगता है। श्रीमान दुनी चन्द जी और कुछ अन्य जनों के परिवर्तन के विषय में बताया। गहरी कामना की कि मेरे सब पारिवारिक जन इन देव प्रभावों से जुड़ सकें। देव प्रभावों से दूर होकर हानि ही हानि है।

20.10.2014 शाम 6 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। श्रीमान जी ने बताया कि हम बहुत ही अच्छी बातें सुनते हैं, परन्तु उन पर अमल नहीं कर सकते। बाबा फरीद जी कहते हैं, "फरीदा बुरे का भला कर, गुस्सा मन में हंडाए, देही रोग न लगदी, पल्ले सब कुछ पाए" यह वाक्य अनेक बार सुनकर भी इस पर अमल नहीं होता। देवात्मा का धर्म अमल करने का धर्म है। श्रीमान बलदेव सिंह जी की भला करने की कई घटनाएं बताई। इसी प्रकार और कई धर्म सम्बन्धियों की घटनाएं बताई, जिन्होंने विरोधियों की और नफरत करने वालों की सेवा की और स्वर्गिय फल पाए। सत्गुरू की अपार कृपा अपने ऊपर हुई महसूस की। उन्होंने उनकी सेवा करवाई जिन्हें मैं विरोधी और दुश्मन समझता था। ऐसे हृदय स्पर्शीय दृष्टांत याद करके सभापति जी गुरू के आगे झुक रहे थे।

21.10.2014 सुबह 9.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। गुरू महाराज अकसर फरमाया करते थे कि नेचर में नियमों का राज है। परिवर्तन का नियम जारी है। परिवर्तन कई बार नज़र नहीं आता। एक एक बाग जो लहलहाता था, धीरे धीरे ख़त्म हो गया, कहते अब भी उसे बाग ही हैं, जबकि उसमें कोई फल, फूल नहीं। हम अपने विचारों, व्यवसायों में परिवर्तित होते रहते हैं। सरदार प्रेम सिंह जी, सरदार सावन सिंह जी ने कैसे उच्च परिवर्तन पाया, ईमानदारी की मिसाल बन गए। माईकल ऐंजलो जो एक मासूम बच्चा था, वह शैतान की भूमिका में आ गया। गुरू महाराज जो परिवर्तन पैदा करते हैं, वह हित मूलक है। नाशुकरे बेटों को शुक्रगुजार बना देते हैं। ज़ालिमों को हमदर्द, बेईमानों को ईमानदार, स्वार्थियों को परोपकारी बनाते हैं। उनकी ज्योति के बिना हमें अपना रूप नज़र नहीं आता। हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, यह उनके प्रभावों के बिना नज़र नहीं आता।

शाम 5 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का दूसरे जीवधारियों से तो ही कुछ अन्तर है, यदि उसमें अच्छे भाव हों। नीच भावों से देव प्रभावों द्वारा ही मोक्ष होती है। उच्च भावों द्वारा ही हमारे सम्बंध स्वर्गीय बनते हैं। माता पिता के सन्मान के दृश्य पेश किए। पति पत्नी का रिश्ता सन्मान भाव से ही विकासकारी बनता है। निजी अनुभव बताए। खुदगर्ज़ी के भाव से मनुष्य कमीना और पापी बनता है। यही परम पूजनीय भगवान की लासानी शिक्षा है।

Published on 5th of the month

20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

धर्मशाला योल में प्रचार

योल कैंट :– 28 अक्तूबर शाम तक श्रीमान बलदेव सिंह जी और डाक्टर विनोद जी खेड़ा श्री सत्यावान जी वरिन्द्र जी डोगरा के पास पहुँचे। रात को 8.30 बजे एक सभा रखी गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने बताया कि बाहर के वातावरण में रहते धर्म सम्बन्धियों को देव प्रभावों की आवश्यकता नहीं रहती। इसलिए वह उच्च संगत के लिए समय ही निकालना नहीं चाहते। परिवारों को इस वातावरण में आने की अत्यन्त आवश्यकता है।

29 अक्तूबर 9 बजे एक सभा हुई। इसमें लांझनी से पुरशोतम जी और धर्मशाला से उनके भाई साहिब भी आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य को सूर्य्य, चन्द्र आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करने में सदीयां लगी हैं, परन्तु अपने विषय में अब भी उसे ज्ञान नहीं। मिथ्या विश्वासी अपने भिन्न विचार रखते हैं। मनुष्य का सच्चा स्वरूप भगवान देवात्मा ने देखा है। उन्होंने यह सत्य ज्ञान दिया है कि मनुष्य सुखों का बन्धुआ है। वह झूठ परायण है। मनुष्य को जितने प्रकार के दुख, झगड़े, फसाद होते हैं, वह इन सुखों की गुलामी के कारण हैं, परन्तु वह इसे देखने के लिए देवात्मा की ज्योति का मोहताज है।

सभा के बाद और जन भी आए, जिनके साथ हितकर बातचीत होती रही।

रात 8.30 बजे, इसमें भी धर्मशाला वाले धर्म सम्बन्धी आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि अनगिणत धर्मों के बावजूद पाप और बुराई का सैलाब आया हुआ है। किसी धर्म में मानवता को नीचता से निकालने की सामर्थ्य नहीं। परन्तु परम पूजनीय भगवान अपनी ज्योति में हमारे नीच कर्मों को दिखाते हैं। उससे अधिकारी आत्माओं को मुक्त करते हैं, इसकी कई उदाहरणें पेश की।

30 अक्तूबर सुबह 9.30 बजे यहां आख़री सभा थी। इसमें भी लांझनी वा धर्मशाला से आकर कई जन शामिल हुए। इस सभा में बताया

—— शेष भाग 13 पेज पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने Surya Laser Den, Chandigarh *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts